



دَفتَرِ مَجْلِسِ اَنصَارِ اللّٰہِ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA



ساراंशِ خُتْبہ: جُم: سبَّیہ دنا اَمیہ رُل مومینیہ ہجرت میزِا مَسرُور اہمہ د خلیفہ تُل مَسیہ اَلخامیس اَبَّیہ دہللاہُ تآلآ
بین سہیل اَجیہ بَیان فِرمُدا 18 September, 2026, سَٹان مَسجِد موبارک, اِسلامآباد, یُ.کے.
(Tabook مہیہ کی تیہ 18, 1405 ہش)

تَوکُّلِ اَللّٰہِ کے ہوالے سے سیرتِ نبوی ﷺ کا اِمان اَفروِج تَجکر:

Mob: 9682536974 E.mail.

ansarullah@qadian.in

Khulasa khutba- 18.09.2026

محله احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَحْمَدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ - الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ - إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ - اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ - صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ.

تَشَهُد، تَأْوُج اور سُر: فَرَاتِہ: کی تِلاوت کے باءِ ہُجُور اَنوَر اَبَّیہ دہللاہُ تآلآ نے فرمایا: اَہْجَرَت سَلَّلَللاہُ اَلہیہ و سَلَلَم کے اَللّٰہ تآلآ پر کامیل تَوکُّل کے ہوالے سے ہِجَرَت-ع-مَدِیَنہ کے باجِ واکِرات بَیان فرمایا۔ ہِجَرَت کے مَوکے پر سُرَاکَا بِن مالیک نے کُرَیہ کی تَرَف سے مُکرَر کیے گئے اِنام کے لالچ میں اَہْجَرَت ﷺ اور ہِجَرَت اَبُو بکر رَظِیَ اللہُ اَنہُ کا تَاکُوب کیا۔ سُرَاکَا باءِ میں مُسَلَمَان ہو گئے تھے اور اُنہوں نے خُود یہ واکِرات بَیان کیا۔ اُنکے مُتَابِک کُرَیہ نے اَہْجَرَت ﷺ اور ہِجَرَت اَبُو بکر رَظِیَ اللہُ اَنہُ کو جِندآ یا مُردآ پکڑنے والے کے لیے سَو-سَو اُٹ مُکرَر کیے تھے۔ سُرَاکَا کو جب مَالُوم ہُآ کہ سَاہِل کی تَرَف تین اَفَراد کا اِک کَرَفِلا جآ رہا ہے اور گَالِیب گُمان یہی ہے کہ یہ مُہمَّمَد ﷺ اور اُنکے سَاثِی ہِے تَو اُنہوں نے اِس خَبَر کو چُپا لیا تاکہ اِنام میں کوئی دُوسرا شَرِیک نہ ہو۔ سُرَاکَا نے اِپنی تَہِج رَفَتار غُڈی مَگَواہِ اور کَرَفِلیہ کا تَاکُوب شُرُ کر دیا۔ وہ جَلَد ہی کَرَفِلیہ کے کَرِیب پُہُچ گیا، یہاں تک کہ اُسے اَہْجَرَت ﷺ کے کُورَان کَرِیم پڑنے کی آواِج بھی سُنائی دینے لگی۔ ہِجَرَت اَبُو بکر رَظِیَ اللہُ اَنہُ بار-بار پِیچے مُڈ کر دِکھتے تھے، لَکِن اَہْجَرَت س. اِذَر-اُذَر نہی دِکھ رہے تھے۔ سُرَاکَا کی غُڈی نے خِلاَف-ع-م_اَمُول اُاکر خَاہِ اور اُسکی اُٹِی رَے میں دُھس گئی۔ اُس نے فَرال نِکالی جَو اُسکے اِرادے کے خِلاَف نِکلی، لَکِن وہ اِنام کے لالچ میں آگے بڑھتا رہا۔ اَخِیرکار غُڈی کی اُٹِی رَے میں دُھس گئی اور سُرَاکَا نے مَہسُوس کیا کہ اِس تَاکُوب میں کوئی خَیر نہی۔

اِس پر سُرَاکَا نے اَمَان کی آواِج لگائی اور کَہا کہ اُسکی تَرَف سے کوئی نُکُسان نہی پُہُچےگا۔ اَہْجَرَت ﷺ نے ہِجَرَت اَبُو بکر رَظِیَ اللہُ اَنہُ سے فرمایا کہ اُس سے پُچھو وہ کَہا چاہتا ہے۔ سُرَاکَا نے اِپنا تَاکُوب کرنے کا مَکُسد بَیان کیا اور کَہا کہ مَکَکا والوں نے آپ دونوں کے لیے

इनाम मुकर्रर किया है और वह उसी लालच में आया था, लेकिन जो कुछ उसके साथ हुआ है उससे वह समझ गया है कि तआकुब दुरुस्त नहीं। उसने ज़ाद-ए-राह और सफ़र के सामान की पेशकश भी की, मगर आँहज़रत ﷺ ने उसे क़बूल नहीं फ़रमाया और सिर्फ़ यह फ़रमाया कि हमारे बारे में किसी को न बताना। सुराक़ा ने इसका वादा किया और अमान की तहरीर तलब की। आँहज़रत स. के इरशाद पर उसे अमान की तहरीर दी गई।

एक रिवायत के मुताबिक़ वापसी के वक़्त आँहज़रत ﷺ ने सुराक़ा को ख़िताब करके फ़रमाया कि सुराक़ा! तेरा क्या हाल होगा जब किसरा के कंगन तेरे हाथ में होंगे? सुराक़ा ने हैरत से पूछा: किसरा बिन हुर्मुज़? आप स. ने फ़रमाया: हाँ, वही किसरा बिन हुर्मुज़। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में जब किसरा के कंगन, ताज और कमरबंद लाए गए तो हज़रत उमर रज़ि. ने सुराक़ा को बुलाया, उन्हें वह कंगन पहनाए और फ़रमाया कि कहो: तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने किसरा बिन हुर्मुज़ से यह दोनों छीन कर अता किए हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. इस वाक़िए का ज़िक़र करते हुए फ़रमाते हैं कि वह कौन सी चीज़ थी जिसने आपके दिल को ऐसा मज़बूत कर दिया? कौन सी ताक़त थी जिसने आपके हौसले को ऐसा बुलंद कर दिया? कौन सी रूह थी जिसने आपके अंदर ऐसी ग़ैर-मामूली ज़िंदगी पैदा कर दी? यह ख़ुदा पर तवक्कुल के करिश्मे थे, उस पर भरोसे के नताइज थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बयान फ़रमाया कि तारीख के बड़े-बड़े बहादुरों के वाक़िआत में भी मुश्किलात के ऐसे मोके पर उनकी हालत का रसूल करीम ﷺ के वाक़िए से मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। नेपोलियन और हुमायूँ बादशाह जैसे बड़े लोगों के हालात में मुश्किलात के वक़्त घबराहट के आसार ज़ाहिर हुए, लेकिन रसूल करीम ﷺ दुनियावी लोगों में से न थे। आपकी नज़र ख़ुदा तआला की तरफ़ थी और आपको यक़ीन था कि वह ख़ुदा जो नूह, इब्राहीम, मूसा, यूनस, अय्यूब, दाऊद, सुलैमान और मसीह का ख़ुदा था, वही आपका ख़ुदा है और वह अपने नेक बंदों का मुहाफ़िज़ है।... ज़ाहिरी असबाब कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि ख़ालिक़-ए-असबाब ही तमाम असबाब का पैदा करने वाला है। यह तवक्कुल ज़ाए नहीं गया। सुराक़ा जो दो सौ ऊँटों के लालच में आया था, माफ़ी माँग कर वापस चला गया और दूसरों को भी तआकुब से रोक दिया। यह ऐसा तवक्कुल था जो किसी झूठे इंसान या पुरफ़रेब दिल में क़ाइम नहीं हो सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि मक्का मुअज़्ज़मा में तेरह साल तक मुसीबतों के ज़माने में आँहज़रत ﷺ ने कामिल रास्तबाज़ के अख़लाक़ दिखाए। आपने ख़ुदा पर तवक्कुल रखा, जज़अ-फ़ज़अ (रोने) से किनारा किया, अपने काम में सुस्ती न की और किसी के रोब से न डरे। कुफ़्रार भी आपकी इस्तक्रामत देख कर इस बात की गवाही देने पर मजबूर हुए कि ऐसी अस्तक्रामत और दुखों की बर्दाश्त कामिल ख़ुदा पर भरोसे के बग़ैर मुमकिन नहीं।

मदीना तशरीफ़ लाने के बाद भी आँहज़रत ﷺ ने तवक्कुल के साथ ज़ाहिरी असबाब इख़्तियार फ़रमाए। हज़रत उबई बिन कअब से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ और सहाबा मदीना आए और अंसार ने उन्हें पनाह दी तो तमाम अरब उनके मुक़ाबले के लिए इक़ट्ठा हो गया। मुसलमानों की हालत यह थी कि वह हथियारों के बग़ैर न रात गुज़ारते थे और न सुबह करते थे। तवक्कुल के साथ हर वक़्त अपनी हिफ़ाज़त का इंतज़ाम भी रखते थे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत में आता है कि एक रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जागते रहे और फ़रमाया कि काश मेरे सहाबा में से कोई नेक

आदमी आज रात मेरी हिफाज़त करता। उसी हालत में हथियारों की आवाज़ सुनाई दी। पूछने पर सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया कि वह आपकी हिफाज़त के लिए आए हैं। एक दूसरी रिवायत में सअद और हुज़ैफ़ा के आने का ज़िक्र है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई और सो गए। इसी दौरान आयत नाज़िल हुई: **وَاللّٰهُ يَعْصِيْكَ مِنَ النَّاسِ** (वल्लाहु यअसिमुका मिनननास)। इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब लोग वापस चले जाएँ, अल्लाह तआला ने मेरी हिफाज़त का ज़िम्मा ले लिया है। इससे मालूम होता है कि जब तक अल्लाह तआला की तरफ़ से यक़ीन-दहानी न हुई, आपने ज़ाहिरी हिफाज़त का इंतज़ाम रखा और जब अल्लाह तआला की तरफ़ से हिफाज़त की यक़ीन-दहानी हुई तो पहरा हटा दिया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: जब रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विभिन्न बादशाहों को तब्लीगी ख़त भेजे तो किसरा ने आपका ख़त तकब्बुर से टुकड़े-टुकड़े कर दिया। आप स. को जब इसका इल्म हुआ तो कामिल तवक्कुल के नतीजे में फ़रमाया कि खुदा खुद इन लोगों को पारा-पारा करे। किसरा ने यमन के वाली के ज़रिए आपको गिरफ़्तार करने के लिए दो सिपाही भेजे। उन्होंने आपको अपने आक्रा के हुक्म से आगाह किया तो आपने किसी घबराहट का इज़हार नहीं किया और फ़रमाया कि आज रात यहाँ ठहरो, कल जवाब दूँगा। अगली सुबह आपने उन्हें वापस जाने को कहा और फ़रमाया कि मेरे रब ने आज रात तेरे रब, यानी किसरा, को क़त्ल कर दिया है। बाद में मालूम हुआ कि उसी रात ख़ुसरो परवेज़ को उसके बेटे शीरावैह साइरस ने क़त्ल कर दिया था। आँहज़रत ﷺ ग़ज़वात के लिए भी कामिल तवक्कुल के साथ अल्लाह तआला के इज़्ज़न से जाते और रवानगी के वक़्त दुआ फ़रमाते थे: **اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عِزِّيْ وَاَنْتَ نَصِيْرِيْ** (अल्लाहुम्मा अंता अजुदी व अंता नसीरी व बिका उक़ातिलु), यानी ए अल्लाह! तू मेरा बाजू है, तू मेरा मददगार है और मैं तेरे ज़रिए लड़ाई करता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि मुश्किलात के वक़्त इज़्तिराब तो इंसानी तक्काज़ा है, लेकिन तवक्कुल को कभी हाथ से नहीं देना चाहिए। बदर के मौके पर आँहज़रत ﷺ ने दुआ की: **يَا رَبِّ اِنْ اَهْلَكْتَ هَذِهِ الْعِصَابَةَ فَلَنْ تُعْبِدَ فِي الْاَرْضِ اَبَدًا** (या रब्बी इन उह्लिक हाज़िहिल इसाबतु फ़लन तुअबदा फ़िल अर्ज़ि अबदन)। आपका इज़्तिराब बशरी तक्काज़ा था, मगर दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला पर तवक्कुल कामिल था। आपने यास, मायूसी और नाउम्मीदी को क़रीब नहीं आने दिया। बशरीयत इज़्तिराब पैदा करती है और ईमान उसको दूर करता है।

एक मौके पर एक दुश्मन ने आँहज़रत ﷺ को अकेला पा कर तलवार सोंत ली और पूछा कि अब कौन तुम्हें मुझसे बचा सकता है? आप स. ने निहायत इत्मीनान से जवाब दिया: अल्लाह। आपके इस कामिल यक़ीन ने उस शख्स पर ऐसा असर किया कि उसके हाथ से तलवार गिर गई और वह आपके सामने मुजरिमों की तरह खड़ा हो गया।

जंग-ए-अहज़ाब में मुसलमानों ने मदीना में रह कर दुश्मन का मुक़ाबला करने का फ़ैसला किया। यह तवक्कुल की कमी की वजह से नहीं बल्कि जंगी हिकमत-ए-अमली के तहत था। मदीना के इर्द-गिर्द खंदक़ खोदी गई ताकि दुश्मन के फ़ौरी हमले से हिफाज़त हो सके। मुसलमान शदीद गुरबत और तंगी के बावजूद खंदक़ की खुदाई में शरीक हुए। विभिन्न रिवायत में दुश्मन की तादाद विभिन्न बयान हुई है; कम अज़ कम दस हज़ार और कहीं पंद्रह हज़ार या चौबीस हज़ार भी बयान हुई है। मुसलमानों की तादाद कम थी, लेकिन वह घबराए नहीं। आख़िरकार अल्लाह तआला ने आँधी और तूफ़ान भेजा, जिससे कुफ़्रार खौफ़ज़दा होकर वापस चले गए और अपना बहुत सा सामान छोड़ गए। जंग-ए-अहज़ाब ही के मौके पर

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में आता है कि खंदक़ खोदते हुए एक सख्त पत्थर सामने आया। आँहज़रत   ने खुद उसे तोड़ने के लिए कुदाल ली, हालाँकि आपके पेट पर भूख की शिद्दत की वजह से पत्थर बँधा हुआ था और तीन दिन से कुछ नहीं खाया था। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने घर जा कर कुछ जौ और बकरी के एक बच्चे का इंतज़ाम किया। खाना तैयार करके रसूलुल्लाह   को दावत दी, लेकिन आप स. ने तमाम मुहाजिरीन व अंसार को साथ ले लिया। थोड़े से खाने में अल्लाह तआला ने बरकत दी और सब सहाबा सेर हो गए, बल्कि खाना बच भी गया। आपने हज़रत जाबिर की बीवी से फ़रमाया कि अब यह खाओ और हदीया भेजो, क्योंकि लोग बहुत भूखे हैं। ग़ज़वा-ए-हुनैन में हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया कि मुसलमान एक मौके पर पीछे हट गए, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैदान से नहीं हटे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी सफ़ेद खच्चर पर सवार थे और अबू सुफ़यान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब उसकी लगाम पकड़े हुए थे। आप स. यह शेर पढ़ रहे थे: اَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبُ اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ (अना न् नबिय्यु ला कज़िब, अना बन् अब्दुल मुत्तलिब), यानी मैं नबी हूँ, इसमें कोई झूठ नहीं; मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

ग़ज़वा-ए-बदर के मौके पर हबीब बिन यसाफ़ नामी एक ताक़तवर और बहादुर शख्स मुसलमानों के साथ जंग में शरीक होना चाहता था, लेकिन उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुआ था। आँहज़रत   ने फ़रमाया कि हमारे साथ सिर्फ़ वही जंग में जाएगा जो हमारे दीन पर है। हबीब बिन यसाफ़ दोबारा और फिर तीसरी मर्तबा आया। आखिरकार जब आँहज़रत   ने पूछा कि क्या तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हो? और उसने हाँ में जवाब दिया तो वह मुसलमान हो गया और निहायत बहादुरी से जंग में शरीक हुआ। इससे मालूम होता है कि अत्यंत आवश्यकता के बावजूद रसूल करीम   ने अल्लाह तआला के वादों पर यक़ीन रखते हुए ग़ैर-मुस्लिम की मदद क़बूल नहीं की।

आखिर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम का बयान पेश फ़रमाया गया कि आज कल के अक्लमंदों के नज़दीक किसी को अपना दुश्मन बनाना ग़लती समझा जाता है, लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महज़ खुदा तआला के लिए हक़ बात बयान की और विभिन्न मज़ाहिब और क़ौमों को दावत दी। आपको अल्लाह तआला पर कामिल यक़ीन और तवक्कुल था और आप अपनी कामयाबियों के बारे में अल्लाह तआला के वादों पर यक़ीन रखते थे। यह कामिल तवक्कुल इस बात का सबूत था कि आप अल्लाह तआला की तरफ़ से थे।

पस आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में तवक्कुल और अमल दोनों साथ-साथ नज़र आते हैं। आप अल्लाह तआला पर कामिल भरोसा रखते थे, लेकिन ज़ाहिरी असबाब इस्तियार करने में भी कोई कमी नहीं करते थे। यही हक़ीक़ी तवक्कुल था कि इंसान अपनी इस्तताअत के मुताबिक़ तमाम ज़रूरी तदाबीर इस्तियार करे और फिर अपने मामले को अल्लाह तआला के सुपुर्द करते हुए उस पर कामिल यक़ीन रखे।

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ إِنَّكَ حَمِيدٌ مُّجِيدٌ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مُحَمَّدٌ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنُؤْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضِلِّهِ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنْ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيتَاءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يُسْتَجِبْ لَكُمْ وَلِذِكْرِ اللّٰهِ كَبِيْرٌ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब - 18001032131